

धोरण - 8 हिन्दी

पुनरावर्तन - 2

Sem : 2

# अभ्यास

**प्रश्न 1 निम्नलिखित परिच्छेद का शुद्ध रूप से पठन और लेखन कीजिए ।**

➤ अच्छी सोसाइटी यदि मिले तो उसका बहुत अच्छा प्रभाव पड़ता है और इससे आत्मसंस्कार होता है। सोसाइटी में सम्मिलित होने से हमारी समझ बढ़ती है, हमारी विवेकबुद्धि तीव्र होती है, हमारी सहानुभूति गहरी होती है, हमें अपनी शक्तियों के उपयोग का अभ्यास होता है। हम अपने साथियों के साथ मिलकर बढ़ना सीखते हैं।

➤ इसी प्रकार हम दूसरों का ध्यान रखना उनके लिए कुछ स्वार्थ त्याग करना, सद्गुणों का आदर करना और सदाचार की प्रशंसा करना सीखते हैं।

आत्मसंस्काराभिलाषी युवक को उस चाल-व्यवहार की अवहेलना नहीं करनी चाहिए जो भले आदमियों के समाज में आवश्यक समझा जाता है।

## प्रश्न 2 रूपरखा के आधार पर कहानी लिखिए ।

एक कंजूस के पास काफी सोना - बक्से में भरकर खेत में गाड़ देना - रोज रात के समय गिनना - चोर का देख लेना - अशरफियों के बदले पत्थर भर देना - दूसरे दिन कंजूस का रोना – एक बूढ़े की सलाह, 'अब पत्थर गिन लेना।'

- एक कंजूस था। उसके पास सोने की बहुत अशरफियाँ थीं। उसने वे अशरफियाँ एक बक्से में रखीं थीं। अशरफियों की चिंता उसे रात को सोने भी नहीं देती थी।

➤ इसलिए उसने उन्हें खेत में गाड़ रखा था। वह रोज रात को जाता, जमीन में से बक्सा निकालता और अशरफियों को एक-एक कर गिनता था। सारी अशरफियाँ सुरक्षित देखकर ही उसे चैन पड़ता था।

➤ एक दिन उसे अशरफियों को गिनते हुए एक चोर ने देख लिया। कंजूस जब अशरफियाँ गिनकर और बक्से को जमीन में गाड़कर चला गया, तब चोर ने सारी अशरफियाँ निकाल लीं और बक्से में पत्थर के टुकड़े (कंकड़) भरकर उसे जमीन में गाड़ दिया।

➤ अगली रात बक्से में अशरफियों के बदले पत्थर के टुकड़े देखकर कंजूस के होश उड़ गए। वह फूट-फूटकर रोने लगा। उसे रोते देखकर पड़ोस के खेत के बूढ़े मालिक ने उससे कहा, "बक्से में रखीं अशरफियाँ तुम्हारे किसी काम की नहीं थीं। केवल गिनने के काम ही आती थीं। तो अब उनके बदले पत्थर के टुकड़े गिनो। क्या फर्क पड़ता है?" कंजूस क्या बोलता! वह सिर पीटकर रह गया।

प्रश्न 3. चित्र देखकर दिए गए शब्दों की सहायता से चार-पाँच वाक्य लिखिए:

(बच्चे, खुश, खेल, चिड़ियाँ, डाली, मुस्कराते, सुंदर, खरगोश)



✓ गीत गा रही है चिड़ियाँ

और बहुत खुश डाली है,

मुस्कुराते बच्चे खेल रहे हैं

गेंद हवा में उछाली है।

खरगोश से खेलती और खिलाती बच्चियाँ

भोली-भाली, सुंदर, कितनी मतवाली है !



**प्रश्न 4. एक दिन निखिल के पिताजी कुछ काम से बाहर गए थे। वह अपनी माँ के साथ सोया हुआ था। आधी रात को जब उसकी नींद उड़ गई तो देखा घर में चोर घुसे हुए थे। तिजोरी से गहने चुरा रहे थे। कुछ देर सोचने के बाद निखिल को उपाय सूझा....**

**(अब आप इस कहानी को आगे बढ़ाइए)**

- **निखिल के पास मोबाइल था। उसने अपने मित्र को संदेश भेजा। मित्र ने अपने पिता को जगाया और सारी बात बताई।**

- मित्र के पिता ने बिना देर किए मुहल्ले के कुछ लोगों के साथ आकर निखिल के मकान को चारों तरफ से घेर लिया ।
- चोर घबरा गए। गहने वहीं छोड़कर उन्होंने भाग निकलने की कोशिश की, पर लोगों ने उन्हें धर दबोचा। पुलिस को भी सूचित कर दिया गया था। फौरन पुलिस की जीप भी आ पहुँची। चोर को पुलिस के हवाले कर दिया गया। इस प्रकार निखिल की सूझ-बूझ से गहने बच गए और चोर पकड़े गए ।
- पुलिस कमिश्नर ने सूझ-बूझ से काम लेने के लिए निखिल की सराहना की ।

# Thanks



# For watching